जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया (उ0प्र0)

चयन आधारित क्रेडिट पद्धति (सी.बी.सी.एस.) के अनुसार
हिन्दी साहित्य –पाठ्यक्रम
एम0ए0 (हिन्दी)–द्वि–वर्षीय

New

पाठ्यक्रम विवरणिका

शैक्षणिक सत्रः 2022–2023 से प्रभावी

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया
परास्नातक

पाठ्यक्रम (2022–2023)

हिन्दी

उत्तर प्रदेश के पूर्वी छोर पर अवस्थित जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, ऋषि–मुनि–संत महात्माओं की तपोभूमि बलिया जनपद का गौरव है। इसकी स्थापना उत्तर प्रदेश राज्य वि0वि0, अधिनियम : 1973 के तहत 2016ई0 में हुई। यह जनपद मुख्यालय से 12 किमी उत्तर बसंतपुर में अनुपम प्राकतिक सौन्दर्य के बीच स्थित है। विद्यालय के सहयुक्त संबद्ध महाविद्यालयों की संख्या एक सौ पच्चीस महाविद्यालय हैं, जिसमें एक राजकीय तथा दस अशासकीय महाविद्यालय अपनी महती भूमिका निभा रहें हैं।

विश्वविद्यालयीय गतिविधियों को सुचारु रूप में संचालन के लिए रा.शि.नी. 2020 के तहत विभिन्न प्रकोष्ठों का गठन किया गया है। इनमें अकादमिक एकीकरण एवं कौशल, अनुसंधान एवं विकास, भारतीय भाषा, संस्कृति एवं कला, दिव्यांग तथा वंचित समूह सहायता इत्यादि प्रमुख है। इसके साथ ही शोध–पीठ के माध्यम से राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न साहित्यिक–सांस्कृतिक कार्यक्रम संचालित किये जातें हैं।

हिन्दी साहित्य –पाठ्यक्रम

लक्ष्य एवं उद्देश्य :–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होता है। इस कारण वह समाज की गतिविधियों से प्रभावित होता है। जब वह अपने मन की तरंगित ललित भावनाओं एवं अनुभूतियों को सार्थक शब्दों में अभिव्यक्त करता है तो साहित्य का जन्म होता है। इसका जन्म एवं विकास मनुष्य के रूप में पशु के कायांतरण के साथ–साथ उसकी चेतना, भावना, आकांक्षा के मानवीय पक्ष के जन्म और विकास से भी संबं

समाज एवं साहित्य मे अन्योन्याश्रित संबंध होता है क्योंकि मनुष्य के सुख–द:ख का साक्षी सहित्य ही होता है।

इस प्रकार ज्ञान–राशि के संचित कोश (साहित्य) में मानव की अनुभूति के विभिन्न पक्ष स्पष्ट होते हैं। यह पाठक, श्रोताओं एंव अध्येताओं को हृदय में अलौकिक आनन्द की अनुभूति उत्पन्न कराता है। कुल मिलाकर किसी भी देश, जाति और वर्ग को जीवंत रखने एवं उसके अतीत रूपों को प्रकट करने का एकमात्र साक्ष्य सहित्य ही होता है।

भारतीय शिक्षा–व्यवस्था में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का स्थायी प्रभाव साहित्य के विद्यार्थियों पर पड़ना स्वाभाविक है। स्नातकोत्तर स्तर पर संचालित इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थी अध्ययन के उपरांत नयी दृष्टि एवं नयी सोच के आधार पर अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने में सक्षम होंगे। हिन्दी साहित्य की समस्त विधाओं के शोधपरक विस्तृत अध्ययन से निम्नलिखित मूल्यों का सृजन दृष्टव्य है–यथा–

1. साहित्य शिक्षण विद्यार्थियों के जीवन में सरसता एवं माननीय गुणों को विकसिक करने में सहायक होगा।
2. संपूर्ण पाठ्यक्रम में भाषा, कविता, कथा–साहित्य, साहित्य–सिद्धांत, आलोचना के साथ ही संचार माध्यमों का अध्ययन–अध्यापन निर्दिष्ट है।
3. साहित्य–शिक्षण एवं अध्ययन में कविता शिक्षण के अन्तर्गत रागात्मक भावों की तुष्टि, सौन्दर्यानुभूति का विकास तथा चित्तवृत्तियों के परिष्कार आदि में कविता की भूमिका के साथ ही सौन्दर्य–तत्वों को समाहित किया गया है, ताकि विद्यार्थियों में काव्यात्मक अभिरुचि को सहजतापूर्वक विस्तृत किया जा सके।
4. गद्य साहित्य की सभी विधाओं को व्यापकता के अनुरूप पाठ्यक्रम की संस्तुति एवं प्रतियोगी परीक्षाओं के अनुरूप निर्मित करने का प्रयास किया गया है ताकि विद्यार्थी वि0आ0 आयोग सहित रोजगारपरक लक्ष्यों को सरलतापूर्वक प्राप्त कर सके।
5. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होता है। वह अपने सभी क्रियाकलापों को भाषिक–संचरण से संचालित करता है। वैश्वीकरण की परिकल्पना के उपरांत बहुभाषिकता का प्रचलन बढा है। इस कारण हिन्दी साहित्य में भाषा–शिक्षण

की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। इसमें संचार के महत्व को सहज ही महसूस किया जा सकता है। इस आधार पर पाठ्यक्रम की रूपरेखा निम्नवत् है :–

- ❖ यह पाठ्यक्रम दो वर्ष एवं चार सेमेस्टर में विभाजित है।
- ❖ प्रत्येक सेमेस्टर में पाँच प्रश्न–पत्र निर्धारित किये गये हैं।
- ❖ प्रत्येक प्रश्न–पत्र का पूर्णांक 100है।
- ❖ पांचवाँ प्रश्न–पत्र अधिन्यास/परियोजना/उपस्थिति/कार्य प्रदर्शन से सम्बंधित होगा।
- ❖ पाठ्यक्रम की प्रवेश–प्रक्रिया तथा सीट निर्धारण विश्वविद्यालय की परिनियमावली के अनुसार होगी।
- ❖ यह पाठ्यक्रम हिन्दी साहित्य के इतिहास के साथ–साथ इसके मूल पाठ को बढ़ावा देने वाला है।
- ❖ हिन्दी साहित्य के इस पाठ्यक्रम को नवाचार एवं प्रासंगिक सांस्कृतिक अवयवों के आधार पर विकसित किया गया है, जिसकी प्रकृति अन्तर्विषयी है।

पाठ्यक्रम की संरचना

भाग	वर्ष	सेमेस्टर	
भाग–1	प्रथम वर्ष	सेमेस्टर प्रथम	सेमेस्टर द्वितीय
भाग–2	द्वितीय वर्ष	सेमेस्टर तृतीय	सेमेस्टर चतुर्थ

सेमेस्टर–प्रथम

सेमेस्टर	प्रश्न–पत्र का नाम	प्रश्न–पत्र कोड	अधिकतम अंक	क्रेडिट
1	1.प्राचीन काव्य	HINCC101	100	5
	2. भाषा विज्ञान	HINCC102	100	5
	3. सगुण भक्ति काव्य	HINCC103	100	5
	4. रीति काव्य	HINCC104	100	5
	5. परियोजना	HINCC105	मूल्यांकन द्वितीय सेमेस्टर के अन्त में	4
			400	24
	एक माइनर/ वैकल्पिक प्रश्नपत्र जो किसी अन्य संकाय के विषय का होगा।		100	4
			500	28

सेमेस्टर–द्वितीय

सेमेस्टर	प्रश्न–पत्र का नाम	प्रश्न–पत्र कोड	अधिकतम अंक	क्रेडिट
2	6. आधुनिक काव्य (छायावादी)	HINCC106	100	5
	7.आधुनिक गद्यः नाटक एवं निबंध	HINCC107	100	5
	8. आधुनिक गद्य : उपन्यास एवं कहानी	HINCC108	100	5
	9. साहित्य सिद्धान्त (भारतीय)	HINCC109	100	5
	10. परियोजना	HINCC110	प्रथम एवं द्वितीय समेस्टर 100	4
	योग		500	24

सेमेस्टर–तृतीय

सेमेस्टर	प्रश्न–पत्र का नाम	प्रश्न–पत्र कोड	अधिकतम अंक	क्रेडिट
3	11. निर्गुण भक्ति काव्य	HINCC111	100	5
	12. छायावादोत्तर काव्य	HINCC112	100	5
	13. साहित्य सिद्धान्त (पाश्चात्य)	HINCC113	100	5
	14. हिन्दी पत्रकारिता	HINCC114	100	5
	15. परियोजना	HINCC115	मूल्यांकन चतुर्थ सेमेस्टर के अन्त में	4
			400	24

सेमेस्टर–चतुर्थ

सेमेस्टर	प्रश्न–पत्र का नाम	प्रश्न–पत्र कोड	अधिकतम अंक	क्रेडिट
4	16. हिन्दी साहित्य का इतिहास	HINCC116	100	5
	17. हिन्दी भाषा एवं लिपि	HINCC117	100	5
	18. लोक साहित्य	HINCC118	100	5
	19. विशेष अध्ययन : कबीर, सूरदास, तुलसीदास,जायसी में से किसी एक का अध्ययन	HINCC119	100	5
	20. परियोजना / साक्षात्कार	HINCC1120	100 तृतीय + चतुर्थ	4
			500	24

1. प्रत्येक विद्यार्थी को प्रथम अथवा द्वितीय सेमेस्टर में एक माइनर/वैकल्पिक प्रश्न पत्र पढ़ना होगा। यह प्रश्न पत्र किसी अन्य संकाय के विषय से होगा।
2. सम्पूर्ण क्रेडिट = 28 +24+24+24= 100
3. सम्पूर्ण अंक 500+500+400+500 = 1900
4. प्रोजेक्ट कार्य सतत मूल्यांकन पर आधारित होगा। प्रथम सेमेस्टर के प्रोजेक्ट कार्य का मूल्यांन द्वितीय सेमेस्टर के प्रोजेक्ट कार्य के साथ होगा। इसी प्रकार तृतीय सेमेस्टर के प्रोजेक्ट कार्य का मूल्यांकन चतुर्थ सेमेस्टर के साथ होगा।

स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम
प्रथम सेमेस्टर प्रथम प्रश्न–पत्र

शीर्षक: प्राचीन काव्य

प्रश्न–पत्र कोड– HINCC101 अधिकतम अंक–100

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों में अपभ्रंश भाषा के प्रति अभिरुचि जागृत करना।
2. सरहपा, हेमचन्द्र, अब्दुल रहमान, मुंज एवं विद्यापति के सन्दर्भ में जानकारी प्राप्त करना।
3. मैथिल कोकिल विद्यापति के सरस पदों से विद्यार्थियों को अवगत कराना।
4. विद्यार्थियों को अपभ्रंश भाषा के माध्यम से हिन्दी भाषा के आरंभिक स्वरूप से परिचित कराना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण–विधि
इकाई–प्रथम			
1–अ	अपभ्रंश प्रकाश में संकलित सरहपा, हेमचन्द्र, अब्दुल रहमान, विद्यापति तथा मुंज कवि की कविताओं की व्याख्या।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन।
ब	डॉ0 शिवप्रसाद सिंह द्वारा सम्पादित पदावली के आरंभिक 62 पदों की व्याख्या।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन।
स	अपभ्रंश प्रकाश में संकलित कवियों एवं कविताओं पर आधारित समीक्षात्मक अध्ययन।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा।
द	डॉ0 शिवप्रसाद सिंह द्वारा सम्पादित विद्यापति पदावली के आधार पर समीक्षात्मक अध्ययन।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा।

अधिन्यास–कार्य :–

1. हिन्दी भाषा के विकास में अपभ्रंश के योगदान पर संक्षिप्त टिप्पणीलिखें ?

अथवा

2. विद्यापति का संक्षिप्त जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डालें।

अधिगम परिणाम :–

1. इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी हिन्दी सहित्य के प्राचीनकाल के कवियों के साहित्यिक अवदान से परिचत हो सकेगें।
2. प्रस्तुत प्रश्न–पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिन्दी की आरंभिक अवस्था से परिचित होंगे।

सहायक ग्रंथ :–

1. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्य का आदिकाल (2008), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. सिंह, डॉ0 नामवर, हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग (2006), लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. द्विवेदी, आँचार्य हजारी प्रसाद, संदेशरासक (2015ई0), राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0, नई दिल्ली।
4. सिंह, शिव प्रसाद, कीर्तिलता और अवहट्ट (1955 ई0), साहित्य भवन, इलाहाबाद।
5. गुलेरी, चन्द्रधर शर्मा, पुरानी हिन्दी (1961), नागरी प्रचारिणी सभा काशी।
6. श्रीवास्तव, डॉ0 वीरेन्द्र, अपभ्रंश भाषा और उसका अध्ययन,(1963 ई0), यश चान्द एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली।
7. पाण्डेय, शम्भूनाथ, अपभ्रंश अवहट्ट : एक अन्तर्यात्रा।
8. तोमर, डॉ0 राम सिंह, प्राकृत, अपभ्रंश साहित्य और उसका हिन्दी प्रभाव।
9. डॉ0 नगेन्द्र, अपभ्रंश साहित्य, हिन्दी अनुसंधान परिषद ग्रंथमाला–8, नई दिल्ली।

हिन्दी प्रथम सेमेस्टर–द्वितीय प्रश्न–पत्र

शीर्षक : भाषा विज्ञान

प्रश्न–पत्र कोड– HINCC102 अधिकतम अंक–100

उद्देश्य :–

1. भाषाविज्ञान के अन्तर्गत विद्यार्थियों को भाषा की परिभाषा, भाषा परिवर्तन के कारण और दिशाएँ, भाषा, बोली और विभाषा की जानकारी दी जायेगी।
2. भाषा विज्ञान के प्रमुख अंगों, अध्ययन पद्धतियों तथा भाषा विज्ञान के ज्ञान की अन्य शाखाओं से संबंधित अवयवों को रेखांकित करना।
3. ध्वनि विज्ञान–स्वनिम विज्ञान और रूपविज्ञान का सैद्धान्तिक, परिचय प्रदान करना।
4. वाक्य विज्ञान, अर्थविज्ञान और शैली विज्ञान का सैद्धान्तिक परिचय प्रदान करना।

इकाई	शीर्षक : पाठ्य विषय	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण–विधि
	इकाई–1		
क	भाषा : परिभाषा, तत्व, अंग प्रकृति, विशेषताएँ (संरचना एवं स्वभागत), भाषा परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ और वाक्, भाषा के विभिन्न स्तर–भेद, व्यक्ति बोली, विभाषा, मानक भाषा तथा उसके विविध रूप।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूहपरिचर्चा/प्रत्यक्ष विधि/सम्प्रेषणपरक विधि
ख	भाषा विज्ञान : स्वरूप और प्रकृति, विषय–क्षेत्र, अंग, प्रमुख अध्ययन पद्धतियाँ, वर्णनात्मक तथा तुलनात्मक, ज्ञान की अन्य शाखाओं से सम्बन्ध।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूहपरिचर्चा/प्रत्यक्ष विधि/सम्प्रेषणपरक विधि
	इकाई–2		
क	ध्वनि–विज्ञान : ध्वनि का अर्थ, ध्वनिग्राम तथा संध्वनि, ध्वनि–गुण तथा उसकी उपयोगिता, ध्वनि की उत्पत्ति–प्रक्रिया, वाग्यन्त्र (ध्वनि तंत्र), ध्वनियों का वर्गीकरण, मानस्वर, ध्वनि परिवर्तन की दिशाएँ एवं कारण, ध्वनि–नियम		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूहपरिचर्चा/प्रत्यक्ष विधि/सम्प्रेषणपरक विधि

ख	स्वनिम विज्ञानः स्वरूप, अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिमों तथा उपस्वनों का अंकन, स्वनिम वितरण के सिद्धान्त		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूहपरिचर्चा/प्रत्यक्ष विधि/सम्प्रेषणपरक विधि
	इकाई–3		
क	रूप विज्ञान : (मारफोलॉजी): शब्द और रूप (पद), सम्बन्ध तत्व एवं अर्थतत्व, सम्बन्ध तत्व के भेद, शब्द कोटियाँ, व्याकरणिक कोटियाँ		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूहपरिचर्चा/प्रत्यक्ष विधि/सम्प्रेषणपरक विधि
ख	वाक्य विज्ञानः वाक्य की अवधारणा, तत्व, वाक्य एवं पद का सम्बन्ध, वाक्य के भेद, बाक्य–विश्लेषण, वाक्य के निकटस्थ अवयव, गहन संरचना और वाह्य संरचना, वाक्य परिवर्तन की दिशाएँ और कारण		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूहपरिचर्चा/प्रत्यक्ष विधि/सम्प्रेषणपरक विधि
	इकाई–4		
क	अर्थ विज्ञान : अर्थ–ज्ञान,महत्त, शब्दार्थ सम्बन्ध, अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ और कारण		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूहपरिचर्चा/प्रत्यक्ष विधि/सम्प्रेषणपरक विधि
ख	विश्व की भाषाओं का वर्गीकरण (क) आकृति मूलक या रूपात्मक (ख) पारिवारिक (ग) अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान–शैली विज्ञान		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूहपरिचर्चा/प्रत्यक्ष विधि/सम्प्रेषणपरक विधि

अधिन्यास–कार्य :–

1. भाषा की परिभाषा देते हुए उसकी विशेषताओं का वर्णन करें।
2. भाषा विज्ञान की परिभाषा देते हुए प्रमुख अध्ययन पद्धतियों पर प्रकाश डालें।
3. अर्थ विज्ञान की परिभाषा देते हुए अर्थ परिवर्तन के कारण और दिशाओं की विवेचना करें।

अधिगम परिणाम :–

1. इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी भाषा विज्ञान की अवधारणा से परिचित हो सकेंगे।
2. विद्यार्थी भाषा विज्ञान को वर्गीकृत करके सहजतापूर्वक अध्ययन करने में सक्षम होंगे।

सहायक ग्रन्थ–

1. तिवारी, डॉ0 भोलानाथ, हिन्दी भाषा, प्रकाशन : किताब महल, इलाहाबाद।
2. तिवारी, डॉ0 भोलानाथ, हिन्दी भाषा की संरचना, प्रकाशन : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. भाटिया, डॉ0 कैलाशचन्द्र, हिन्दी भाषा, प्रकाशन : साहित्य भवन प्रा0लि0, नई दिल्ली।
4. पाण्डेय, डॉ0 राजकमल, हिन्दी संरचना का शैक्षिक स्वरूप, प्रकाशक : विराट प्रकाशन, आगरा।
5. वाजपेयी, अचार्य किशोरीदास, हिन्दी शब्दानुशासन,प्रकाशक : नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
6. गुरू, कामता प्रसाद, हिन्दी व्याकरण
7. बाहरी, डॉ0 हरदेव, हिन्दी भाषा, प्रकाशक : अभिव्यक्ति प्रकाशन,इलाहाबाद।
8. शर्मा, आचार्य देवेन्द्रनाथ, हिन्दी भाषा और नागरी लिपि, प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
9. मिश्र, डॉ0 नरेश, नागरी लिपि और उसकी समस्याएँ, प्रकाशक : मन्थन पब्लिकेशनस, रोहतक।
10. शर्मा, आचार्य देवेन्द्रनाथ, राष्ट्रभाषा हिन्दी : समस्याएँ एवं समाधान, प्रकाशक : लोक प्रकाशन, इलाहाबाद।
11. त्रिपाठी, डॉ0 सत्यनारायण, हिन्दी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास
12. पाठक, गोपाल स्वरूप, हिन्दी भाषा, लिपि का इतिहास एवं प्रयोग

हिन्दी प्रथम सेमेस्टर–तृतीय प्रश्न–पत्र

शीर्षक : सगुण भक्ति काव्य

प्रश्न–पत्र कोड– HINCC103 अधिकतम अंक–100

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों को सगुण भक्ति धारा के प्रतिनिधि कवियों की कविताओं के विषय में जानकारी देना।
2. इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी सगुण भक्ति के महत्व को समझ सकेंगे।
3. भ्रमरगीत सार के अध्ययन से विद्यार्थी उद्धव–गोपी संवाद की सार्थकता से परिचित हो सकेंगे।
4. रामचरितमानस के अध्ययन से विद्यार्थी गुरूमहिमा, सत्संगति, ज्ञानभक्ति और वैराग्य तथा लोक जनमानस के आदर्श को स्थापित कर सकेंगे।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण–विधि
1	व्याख्येय– भ्रमरगीत सार (पद सं0–21 से 70 तक) सं0ग्रन्थ–भ्रमरगीत सार–डॉ0 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन।
2	व्याख्येय– रामचरितमानस बालकाण्ड : प्रारम्भ से 43 दोहे उत्तरकाण्ड : 117 से130 दोहे		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन।
3	समीक्षात्मक अध्ययन : सूरदास		व्याख्यान/विश्लेषण विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा।
4	समीक्षात्मक अध्ययन : तुलसीदास		व्याख्यान/विश्लेषण विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा।

अधिन्यास कार्य–

1. भ्रमरगीत सार के आधार पर सगुण भक्ति की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

रामचरितमानस के आधार पर तुलसीदास की लोक भावना की प्रासंगिता सिद्ध कीजिए।

अथवा

सूरदास की कविता में सगुण–निर्गुण का अदभुत सामन्जस्य दृष्टिगत होता है। भ्रमरगीत सार के आधार पर इस कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

अधिगम परिणाम–

1. प्रस्तुत प्रश्न–पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी भक्ति आन्दोलन एवं भक्ति काव्य की अवधारणा के प्रति नयी समझ विकसित करने में समर्थ होंगे।
2. सूरदास एवं तुलसीदास के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी सामाजिक,सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर समझ विकसित कर सकेंगे।

सहायक ग्रन्थ–

1. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र , त्रिवेणी, प्रकाशक : नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
2. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र , सूरदास, प्रकाशक : नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
3. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, सूर साहित्य, प्रकाशक : हिन्दी–ग्रन्थ, रत्नाकर लि० बम्बई।
4. शर्मा, हरवंशलाल, सूरदास और उनका साहित्य (सं०), प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. गौतम, डॉ० मनमोहन, सूर की काव्यकला, प्रकाशक : हिन्दी अनुसंधान परिषद, दिल्ली।
6. शर्मा, गोविन्द राम, सूर की काव्य साधना।
7. खण्डेलवाल, जयकिशन प्रसाद, महाकवि सूरदास।
8. वाजपेयी, नन्द दुलारे, महाकवि सूरदास।
9. पाण्डेय, मैनेजर, भक्ति आन्दोलन और सूर का काव्य, प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. सिंह, उदयभानु, तुलसी काव्य मीमांसा, प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. त्रिपाठी, रामनरेश, तुलसीदास और उनका काव्य।
12. त्रिपाठी, विश्वनाथ, लोकवादी तुलसीदास।
13. सिंह, डॉ० केशव प्रसाद एवं सिंह, डॉ० वासुदेव, तुलसी : संदर्भ और दृष्टि।
14. मिश्र, शिवकुमार, भक्ति आन्दोलन और भक्तिकाव्य।
15. वाजपेयी, नंददुलारे, सूर–संदर्भ, प्रकाशक : इडियन प्रेस लि०, प्रयाग।

हिन्दी प्रथम सेमेस्टर–चतुर्थ प्रश्न–पत्र

शीर्षक : रीति काव्य

प्रश्न–पत्र कोड– HINCC104 अधिकतम अंक–100

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों को रीतिकालीन विभिन्न काव्य पद्धतियों/ शैलियों का ज्ञान प्रदान करना।
2. विद्यार्थियों को रीतिकालीन काव्यधारा के मुख्य भेदों (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त) के सम्बन्ध में समझ विकसित करना।
3. बिहारी के दोहे की अर्थवत्ता को स्पष्ट करते हुए उनकी 'गागर में सागर' भरने वाली सामर्थ्य को उदघाटित करना।
4. घनानंद की कविता के माध्यम से स्वच्छन्द प्रेम के महत्व को उदघाटित करना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण–विधि
1	व्याख्येय– बिहारी सतसई के चयनित 50 दोहे।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन।
2	व्याख्येय– घनानन्द के चयनित 40 कवित्त।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन।
3	समीक्षात्मक अध्ययन : बिहारी		व्याख्यान/विश्लेषण विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा।
4	समीक्षात्मक अध्ययन : घनानन्द		व्याख्यान/विश्लेषण विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा।

अधिन्यास कार्य –

बिहारी के दोहों में भक्ति, नीति और शृंगार की धारा प्रवाहित होती है। इस कथन के आलोक में बिहारी का मूल्यांकन करें।

अथवा

घनानन्द 'प्रेम की पीर' के कवि हैं स्पष्ट कीजिए।

अधिगम परिणाम–

1. इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के रीतिकालीन कवियों के साहित्यिक अवदान से परिचित हो सकेंगे।
2. इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी बिहारी एवं घनानन्द के काव्य सौन्दर्य के आधार पर रचनात्मक रूप में नये भावबोध विकसित कर सकेंगे

संपादित पाठ्य ग्रन्थ–

बिहारी और घनानन्द (चयनित काव्य संग्रह)

सम्पादक –निहार, डॉ0 अमलदार, राय, डॉ0 अखिलेश कुमार

सहायक ग्रन्थ–

1. मिश्र, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद, बिहारी की वाग्विभूति।
2. मिश्र, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद, हिन्दी साहित्य का अतीत भाग–2।
3. शर्मा, हरवंशलाल, बिहारी और उनका साहित्य।
4. गौड़, डॉ0 मनोहर लाल, घनानन्द और स्वच्छन्द काव्यधारा।
5. डॉ0 नगेन्द्र , रीति काव्य की भूमिका।
6. लाल, किशोरी, घनानन्द : काव्य और आलोचना।
7. द्विवेदी, डॉ0 सूर्यनारायण, रीतिकालीन काव्य सिद्धान्त।
8. सिंह, डॉ0 विजयपाल, रीतिकाव्य–कोश।

स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम

द्वितीय सेमेस्टर प्रथम प्रश्न–पत्र

शीर्षक: आधुनिक काव्य

(छायावाद : प्रसाद, पंत,निराला और महादेवी वर्मा)

प्रश्न–पत्र कोड– HINCC106 — अधिकतम अंक–100

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियो को छायावाद की परिभाषा एवं काव्य शैली से परिचित कराना।
2. छायावादी युग की प्रतिनिधि रचना 'कामायनी' की कथा वस्तु से अवगत कराना।
3. पंत की कविताओं के विविध आयामों से विद्यार्थियों को परिचित कराना।
4. निराला और महादेवी वर्मा के साहित्य से विद्यार्थियोका साक्षात्कार कराना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण–विधि
1	व्याख्येय– कामायनी, (श्रद्धा तथा लज्जासर्ग) तारापथ (प्रथम रश्मि, मौन निमंत्रण,परिवर्तन(1, 6, 7, 11, 31वा अंश) नौका विहार, बापू के प्रति		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य /समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन।
2	व्याख्येय– राग–विराग, (निराला की चुनी हुई कविताओं का संग्रह) सम्पा. : रामविलास शर्मा (वह तोडती पत्थर, सरोज स्मृति, राम की शक्ति पूजा) दीपशिखा (पंथ होंने दो अपरिचित,सब बुझे दीपक जला लूं,मोम सा तन घुल चुका, पूछता क्यों शेष कितनी रात)		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन।
3	समीक्षात्मक अध्ययन (जयशंकर प्रसाद तथा सुमित्रानन्दन पंत)		व्याख्यान/ विश्लेषण विधि/ श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन।
4	समीक्षात्मक अध्ययन (सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला तथा महादेवी वर्मा		व्याख्यान/ विश्लेषण विधि/ श्यामपट्ट कार्य /समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन।

अधिन्यास कार्य –

1. 'पल्लव' छायावाद का घोषणा–पत्र (मेनीफेस्टो) है।' इस कथन की विवेचना कीजिए।

अथवा

प्रत्यभिज्ञा दर्शन के आधार पर 'कामायनी' का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

'निराला ओज और औदात्य के कवि हैं।' इस कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

अधिगम परिणाम–

1. इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी आधुनिक काव्य की प्रमुख शाखाओं में से एक छायावादी काव्य के चारों प्रमुख स्तम्भों से परिचित होंगे।
2. विद्यार्थी छायावादी कविता में व्यक्त बौद्धिक चेतना के प्रमुख स्वरों से अनुप्राणित होंगे।

सहायक ग्रन्थ–

1. कुमार विमल , छायावाद का सौन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन
2. कुमार, राजेन्द्र , (सं0) निराला होने का अर्थ और तीन लम्बी कविताएँ।
3. चतुर्वेदी, रामस्वरूप, कामायनी का पुनर्मूल्यांकन , लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. पाण्डेय, डॉ0 त्रिलोकीनाथ , छायावादी काव्य परंपरा और प्रयोग
5. पालीवाल,नारायणदत्त, सुमित्रानन्दन पंत।
6. मदान, इन्द्रनाथ, महादेवी : चिन्तन व कला।
7. मुक्तिबोध, गजानन माधव, कामायनी : एक पुनर्विचार । राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
8. यशदेव, पन्त का काव्य और युग।
9. वाजपेयी, नन्ददुलारे, जयशंकर प्रसाद, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
10. डॉ0 नगेन्द्र, सुमित्रानन्दन पंत, साहित्य रत्नभण्डार, आगरा।
11. सक्सेना, डॉ0 द्वारिका प्रसाद, कामायनी भाष्य।
12. सिंह ,डॉ0 बच्चन, क्रान्तिकारी कवि निराला
13. सिंह, दूधनाथ, निराला : आत्महन्ता आस्था।
14. सिंह, विजय बहादुर, जातीय अस्मिता के प्रश्न और जयशंकर प्रसाद, साहित्य भण्डार प्रकाशन, इलाहाबाद।
15. सिंह, नामवर, छायावाद
16. श्रोत्रिय, प्रभाकर, जयशंकर प्रसाद की प्रासंगिता।
17. शर्मा, रामविलास, निराला की साहित्य –साधना
18. हुकुमचन्द, राजपाल, महादेवी का काव्य सौन्दर्य।

स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम

द्वितीय सेमेस्टर द्वितीय प्रश्न–पत्र

शीर्षक: आधुनिक गद्य नाटक तथा निबंध

प्रश्न–पत्र–कोड– HINCC107 अधिकतम अंक–100

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थी नाटक विधा के उद्भव और विकास से परिचत हो सकेंगे।
2. विद्यार्थी निबंध विधा के विकासक्रम को समझ सकेंगे।
3. चन्द्र गुप्त और आधे–अधूरे नाटक की कथावस्तु मे निहित मूल संवेदना से विद्यार्थियों को परिचित कराना।
4. हिन्दी साहित्य के विभिन्न पीढ़ी के निबंधकारों की निबंध–शैली से विद्यार्थियों को परिचित कराना।

प्रकार्ड	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण – विधि
1	व्याख्येय– चन्द्रगुप्त (नाटक), जयशंकर प्रसाद अथवा आधे– अधूरे (नाटक) मोहन राकेश		व्याख्यान विधि / श्यामपट्ट कार्य / समूह परिचर्चा / सस्वर वाचन / अभिनय कौशल
2	व्याख्येय–हिन्दी निबंध (संपादन)- डॉ जैनेन्द्र कुमार 1.प्रताप नारायण मिश्र–धोखा, 2.रामचन्द्र शुक्ल– लोभ और प्रीति, 3. हजारी प्रसाद द्विवेदी– अशोक के फूल, 4. राम विलास शर्मा– परंपरा का मूल्यांकन, 5. हरिशंकर परसाई– वैष्णव की फिसलन, 6. विद्यानिवास मिश्र– छितवन की छाँह		व्याख्यान विधि / श्यामपट्ट कार्य / समूह परिचर्चा / सस्वर वाचन / अभिनय कौशल
3	(समीक्षात्मक अध्ययन) चन्द्रगुप्त (नाटक) जयशंकर प्रसाद अथवा आधे–अधूरे (नाटक)		व्याख्यान विधि / श्यामपट्ट कार्य / समूह परिचर्चा / सस्वर वाचन / अभिनय कौशल
4	(समीक्षात्मक अध्ययन) हिन्दी निबंध		व्याख्यान विधि / श्यामपट्ट कार्य / समूह परिचर्चा / सस्वर वाचन / अभिनय कौशल

अभिन्यास कार्य –

1. चन्द्रगुप्त नाटक के आधार पर चन्द्रगुप्त और अलका का चरित्र–चित्रण कीजिए।

अथवा

'आधे–अधूरे नाटक' का मुख्य प्रतिपाद्य विषय अपने शब्दों मे लिखिए।

अथवा

ललित निबंधकार के रूप में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के योगदान की समीक्षा कीजिए।

अधिगम परिणाम–

1. इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी आधुनिक गद्य की प्रमुख विधाओं, नाटक एवं निबन्ध विधा के अन्तर्गत रचे गये प्रमुख नाटकों एवं निबन्धों का आस्वादन कर लेंगे।
2. विद्यार्थी 'चन्द्रगुप्त' एवं 'आधे–अधूरे' नाटक के अध्ययनोपरान्त अपने देश के स्वर्णिम अतीत से राष्ट्रप्रेम की प्रेरणा ग्रहण करेंगे तथा आधुनिक समाज की विसंगतियों को पहचानने में सक्षम होंगे।

सहायक ग्रन्थ–

1. ओझा,डॉ0 दशरथ, हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास, राजपाल एण्ड संस, नई दिल्ली।
2. गुप्त, डॉ0 गंगा प्रसाद , हिन्दी साहित्य में निबन्ध एवं निबन्धकार।
3. चातक गोविन्द, प्रसाद के नाटक : सृजनात्मक धरातल और भाषिक चेतना, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. जयनाथ नलिन, हिन्दी के निबन्धकार।
5. डॉ0 हरिमोहन, हिन्दी निबन्ध के आधार–स्तम्भ, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. तिवारी, रामचन्द्र, हिन्दी का गद्य– साहित्य। वि0वि0 प्रकाशन, वाराण
7. मिश्र, जगन्नाथ प्रसाद, प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन, नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्स,वाराणसी।
8. सिंह, बच्चन, हिन्दी नाटक, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम

द्वितीय सेमेस्टर तृतीय प्रश्न–पत्र

शीर्षकः आधुनिक गद्य : उपन्यास एवं कहानी

प्रश्न–पत्र कोड– HINCC108 अधिकतम अंक–100

उद्‌देश्य :–

1. विद्यार्थी उपन्यास विधा के उद्‌भव और विकास से परिचित हो सकेंगे।
2. विद्यार्थी कहानी विधा के उद्‌भव और विकास से अवगत हो सकेंगे।
3. गोदान के माध्यम से विद्यार्थी भारतीय कृषक जीवन की विभिन्न समस्याओं एवं चुनौतियों की पहचान करने में सक्षम हो सकेंगे।
4. उषा प्रियंवदा की 'वापसी' कहानी के आधार पर विद्यार्थी सेवानिवृत्ति के पश्चात् पाश्चात्य शिक्षा से प्रेरित आधुनिक भारतीय परिवार में बुजुर्गों की कठिनाईयों को समझ सकेंगे।

इकाई	शीर्षक	आवंटित अवधि (60 घंटे)	शिक्षण विधि
1	व्याख्येय– गोदान (उपन्यास)– प्रेमचंद (अथवा) शेखरः एक जीवनी भाग– एक (उपन्यास)– अज्ञेय		व्याख्यान विधि/ प्रायोगिक कार्य/ समूह परिचर्चा/ स्वतंत्र पठन
2	व्याख्येय–आधुनिक कहानियाँ 1. प्रेमचन्द–बूढ़ी काकी, 2.जयशंकर प्रसाद – आकाशदीप,3. भिष्म साहनी– चीफ की दावत, 4. मोहन राकेश– मलबे का मालिक, 5. निर्मल वर्मा– परिन्दे, 6. शिव प्रसाद सिंह–हत्या और आत्म हत्या के बीच, 7. अमरकान्त– दोपहर का भोजन, 8. उषा प्रियंवदा– वापसी, 9. कृष्णा सोबती– सिक्का बदल गया, 10. विष्णु प्रभाकर– धरती अब भी घूम रही है, 11. काशीनाथ सिंह– सदी का सबसे बड़ा आदमी		व्याख्यान विधि/ प्रायोगिक कार्य/ समूह परिचर्चा/ स्वतंत्र पठन
3	(आलोचनात्मक अध्ययन) गोदान (उपन्यास)– प्रेमचन्द, शेखर : एक जीवनी भाग– एक (उपन्यास)– अज्ञेय		व्याख्यान विधि/ प्रायोगिक कार्य/ समूह परिचर्चा/ स्वतंत्र पठन
4	(आलोचनात्मक अध्ययन) आधुनिक कहानियाँ		व्याख्यान विधि/ प्रायोगिक कार्य/ समूह परिचर्चा/ स्वतंत्र पठन

अधिन्यास कार्य –

1. 'गोदान' कृषक जीवन की करुण गाथा है।' इस कथन की विवेचना कीजिए।

अथवा

'शेखर : एक जीवनी' के आधार पर शेखर की चरित्रगत विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

भीष्म साहनी की कहानी 'चीफ की दावत' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

अधिगम परिणाम–

1. इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी आधुनिक गद्य की प्रमुख विधाओं, यथा– उपन्यास एवं कहानी विधा के अन्तर्गत प्रमुख उपन्यासों और कहानियों के विषय में ज्ञान–समृद्ध होंगे।
2. विद्यार्थी साहित्य के दर्पण में समकालीन समाज का यथार्थ प्रतिबिम्ब देखेंगे तथा 'गोदान' जैसे उपन्यास में चित्रित कृषक एवं मजदूर वर्ग के जीवन की चुनौतियों को दूर करने हेतु क्रियाशील होंगे।

सहायक ग्रन्थ–

1. त्रिपाठी, विश्वनाथ, कुछ हिन्दी कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. मिश्र, रामदरश, हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा।
3. सिंह, डॉ0 त्रिभुवन, हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी।
4. सिंह, विजय मोहन, आज की कहानी, प्रकाशन : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. सिंह, नामवर, कहानी : नयी कहानी, प्रकाशन : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. शर्मा, रामविलास, प्रेमचन्द और उनका युग।
7. शर्मा, डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद, कहानी का रचना विधान।
8. श्रीवास्तव, डॉ0 निवेदिता, सामाजिक संरचना और नयी कहानी।

स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम

द्वितीय सेमेस्टर चतुर्थ प्रश्न–पत्र

शीर्षक: साहित्य सिद्धान्त : (भारतीय)

प्रश्न–पत्र कोड– HINCC109 अधिकतम अंक–100

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों को भारतीय काव्य शास्त्र की परम्परा से परिचित कराते हुए काव्य के लक्षण, हेतु एवं प्रयोजन से अवगत कराना।
2. विद्यार्थी को रस संप्रदाय का इतिहास उसके अवयव, रस निष्पत्ति और साधारणीकरण की अवधारणा से परिचित कराना।
3. विद्यार्थियों को अलंकार एवं रीति सम्प्रदाय की मूल स्थापनाओं का ज्ञान प्रदान करना।
4. विद्यार्थियों को ध्वनि एवं वक्रोक्ति सिद्धान्त की मौलिक जानकारी प्रदान करना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण–विधि
1	(क) काव्य : लक्षण, हेतु, प्रयोजन एवं शब्द शक्ति (ख) भारतीय काव्य शास्त्र की परम्परा : परिचयात्मक पर्यावलोकन		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य /समूह परिचर्चा
2	रस सिद्धान्त : रस सम्प्रदाय का विकास, रस का स्वरूप, रस के अंग,रस–निष्पत्ति, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य /समूह परिचर्चा
3	(क) अलंकार सिद्धान्त : अलंकार सम्प्रदाय का इतिहास, अलंकार संप्रदाय की मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का भेद, वर्गीकरण, (ख) रीति सिद्धान्त : रीति सिद्धान्त का इतिहास,रीति की अवधारणा, रीति एवं गुण, रीति एवं कला, रीतियों का भौगोलिक, प्रादेशिक आधार, रीति–भेद, स्थापनाएँ एवं मूल्यांकन।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य /समूह परिचर्चा

4	(क) ध्वनि सिद्धान्त : ध्वनि सम्प्रदाय का इतिहास, ध्वनि के विविध अर्थ, ध्वनि का अभिप्राय, ध्वनि संप्रदाय की मूल स्थापना। (ख) वक्रोक्ति सिद्धान्त : वक्रोक्ति सिद्धान्त का इतिहास, वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ, वक्रोक्ति सिद्धान्त की समीक्षा।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य /समूह परिचर्चा

अधिन्यास कार्य –

1. रस सम्प्रदाय का सामान्य परिचय देते हुए रस सूत्र एवं रस–निष्पत्ति शब्द की व्याख्या करें।

अथवा

" ध्वनि काव्य की आत्मा है" इस कथन की सार्थकता सिद्ध करें।

अधिगम परिणाम–

1. इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी भारतीय काव्य शास्त्र के विविध सम्प्रदायों और सिद्धान्तों के परिज्ञान में समर्थ होंगे तथा साहित्य में व्याप्त काव्यशास्त्रीय अवयवों (रस,छन्द, अलंकारादि) की पहचान करने में सक्षम होंगे।

सहायक ग्रन्थ–

1. डॉ0 नगेन्द्र, भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका, प्र0 नेशनल पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली।
2. तिवारी, डॉ0 रामचन्द्र, भारतीय एवं पश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी आलोचना, वि0वि0 प्रकाशन, वाराणसी।
3. त्रिपाठी, डॉ0 राममूर्ति, भारतीय काव्यशास्त्र की नयी व्याख्या।
4. मिश्र , डॉ0 भगीरथ, काव्य रस चिन्तन और आस्वाद।
5. मिश्र, डॉ0 भगीरथ, काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी।
6. राय, बाबू गुलाब, सिद्धान्त और अध्ययन।
7. वर्मा, रघुवंश सहाय, भारतीय काव्य के प्रतिनिधि सिद्धान्त, चौखम्बा प्रेस, वाराणसी।
8. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, रस–मीमांसा।

स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम

तृतीय सेमेस्टर प्रथम प्रश्न–पत्र

शीर्षक: निर्गुण भक्ति काव्य

प्रश्न–पत्र कोड– HINCC111 अधिकतम अंक–100

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थी निर्गुण भक्तिकाव्य के प्रतिनिधि कवियों की कविताओं के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. इस प्रश्न–पत्र के माध्यम से विद्यार्थी निर्गुण भक्ति के महत्व को समझ सकेंगे।
3. कबीर के पदों के माध्यमसे विद्यार्थी कबीर की सामाजिक चेतना को समझ सकेंगे।
4. जायसी की कविता के माध्यम से हिन्दू धर्म में प्रचलित पौराणिक कथाओं, कथानक रूढ़ियों एवं रीति–रिवाज़ों से परिचित हो सकेंगे।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण–विधि
1	(व्याख्येय) कबीर, (दोहा, पद सं0–160 से 209)– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य /समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन।
2	(व्याख्येय) जायसी ग्रन्थावली, (मानसरोदक खण्ड, संदेश खण्ड, नागमती वियोग खण्ड) संपादक–रामचन्द्र शुक्ल।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य /समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन।
3	(समीक्षात्मक अध्ययन) कबीर		व्याख्यान/विश्लेषण विधि/ श्यामपट्ट कार्य /समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन।
4	(समीक्षात्मक अध्ययन) जायसी		व्याख्यान/विश्लेषण विधि/ श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन।

अधिन्यास कार्य –

1. 'कबीर वाणी के डिक्टेटर थे।' आचार्य द्विवेदी के इस कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

रहस्यवादी कवि के रूप में जायसी का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

भक्ति आन्दोलन एवं कबीर पर सारगर्भित लेख लिखें।

अधिगम परिणाम–

1. इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी भक्ति आन्दोलन के महत्त्व से परिचित होंगे तथा कबीर एवं जायसी की कविताओं का लोक के ऊपर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने में समर्थ होंगे।
2. विद्यार्थी समाजोत्थान में निर्गुण भक्ति काव्य की भूमिका का वर्णन करने में समर्थ होंगे।

सहायक ग्रन्थ–

1. चतुर्वेदी, परशुराम, कबीर साहित्य की परख।
2. तिवारी, रामचन्द्र, कबीर मीमांसा।
3. तिवारी, रामपूजन, सूफी मत साधना और साहित्य।
4. त्रिगुणायत, डॉ0 गोविन्द, जायसी का पद्मावत : काव्य और आदर्श।
5. द्विवेदी, आचार्य हजारी प्रसाद,कबीर, राजकमल, प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. 'नीहार' डॉ0 अमलदार, साहित्य : संवेदना और विचारधारा।
7. रघुवंश, कबीर : एक नयी दृष्टि।
8. रघुवंश, जायसी : एक नयी दृष्टि।
9. वर्मा,डॉ0 राम कुमार, कबीर : एक अनुशीलन।
10. शुक्ल ,रामचन्द्र, त्रिवेणी, वि0वि0 प्रकाशन, वाराणसी।
11. श्रीवास्तव, जगदीश प्रसाद, जायसी के पद्मावत का मूल्यांकन।

स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम

तृतीय सेमेस्टर द्वितीय प्रश्न–पत्र

शीर्षक: (छायावादोत्तर काव्य–दिनकर,अज्ञेय, मुक्तिबोध, नागार्जुन,केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह, त्रिलोचन, केदारनाथ सिंह

प्रश्न–पत्र कोड– HINCC112 अधिकतम अंक–100

उद्देश्य :–

1. छायावादोत्तर काव्य की विविध प्रवृत्तियों एवं वादों से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।
2. तारसप्तक के महत्त्व से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।
3. विद्यार्थी प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद की मूलभूत विशेषताओं को आत्मसात करते हुए दोनों प्रवृत्तियों के मध्य अन्तर को समझ सकेंगे।
4. इस युग के प्रमुख कवियों की कविताओं के माध्यम से वर्तमान युग की समस्याओं को जोड़कर देखने में सक्षम होंगे।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण–विधि
1	(व्याख्येय) उर्वशी (तृतीय सर्ग) रामधारी सिंह दिनकर		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन।
2	(व्याख्येय) छायावादोत्तर प्रतिनिधि कवि। संपादक–डॉ० श्रीपति यादव		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन।
3	(समीक्षात्मक अध्ययन) उर्वशी (तृतीय सर्ग)		व्याख्यान/विश्लेषण विधि/ श्यामपट्ट कार्य /समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन।
4	(समीक्षात्मक अध्ययन) छायावादोत्तर प्रतिनिधि कवि		व्याख्यान/विश्लेषण विधि/ श्यामपट्ट कार्य /समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन।

अधिन्यास कार्य –

1. 'अँधेरे में' कविता का मुख्य प्रतिपाद्य विषय क्या है? स्पष्ट करें।

अथवा

नागार्जुन लोकचेतना के कवि हैं। सोदाहरण लिखें।

अथवा

अज्ञेय की 'असाध्य वीणा' जीवन का प्रतीक है। इस कथन की समीक्षा कीजिए।

अधिगम परिणाम–

1. इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी आधुनिक काव्य की महत्त्वपूर्ण शाखाओं में से एक छायादोत्तर काव्य के प्रमुख कवियों से परिचित हो जायेंगे तथा अँधेरे में, असाध्यवीणा, उर्वशी आदि प्रमुख कविताओं की समीक्षा कर लेंगे।

सहायक ग्रन्थ–

1. कुमार, डॉ0 वचन देव, उर्वशीः विचार और विश्लेषण।
2. चतुर्वेदी, प्रो0 रामस्वरूप, अज्ञेय की आधुनिक कविता की समस्याएँ, प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, इलाबाद।
3. चतुर्वेदी, रामस्वरूप, अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या
4. चतुर्वेदी, सं0जगदीश प्रसाद, धूपछाँही दिनकर।
5. त्रिपाठी, डॉ0 चन्द्रकला, अज्ञेय और नयी कविता।
6. प्रताप, प्रो0 सुरेन्द्र , मुक्तिबोध : विचारक, कवि,कथाकर, प्रकाशन नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
7. राय, डॉ0 रामकमल, अज्ञेय : सृजन और संघर्ष, प्रकाशन : नेशलन पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम

तृतीय सेमेस्टर तृतीय प्रश्न–पत्र

शीर्षकः साहित्य सिद्धान्त (पाश्चात्य)

प्रश्न–पत्र कोड– HINCC113 अधिकतम अंक–100

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों को पाश्चात्य काव्यशास्त्र से परिचय कराते हुए प्रमुख सिद्धान्तों यथा–अनुकरण, विरेचन आदि का मौलिक ज्ञान प्रदान करना।
2. उदात्त की संकल्पना और कल्पना फैंटेसी सिद्धान्त का विद्यार्थी को विस्तृत अध्ययन कराना।
3. निर्वैयक्तिता के सिद्धान्त को विद्यार्थी को आत्मसात् कराना।
4. स्वच्छन्दतावाद और मार्क्सवादी काव्य सिद्धान्त से विद्यार्थियों को परिचित कराना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण–विधि
1	(क)–प्लेटो : काव्य सिद्धान्त (ख)–अरस्तू : अनुकृति, त्रासदी और उसके विविध तत्त्व, विरेचन सिद्धान्त, प्लेटो और अरस्तू के काव्य सिद्धान्तों की तुलना।		व्याख्यान/ श्यामपट्ट कार्य / समूह परिचर्चा/ विश्लेषण
2	(क)–लोंजाइनसः काव्य में उदात्त की अवधारणा एवं उसके विविध तत्त्व, (ख)–वर्ड्सवर्थ : काव्य भाषा का सिद्धान्त (ग)–कॉलरिज : कल्पना और फैंटेसी		व्याख्यान/ श्यामपट्ट कार्य / समूह परिचर्चा/ विश्लेषण
3	(क) टी०एस० एलिएटः परम्परा की अवधारणा और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त, वस्तुनिष्ठ समीकरण (ख)–आई०ए० रिचर्ड्स : मूल्य सिद्धान्त, भाषा के विविध प्रयोग, सम्प्रेषण –सिद्धान्त		व्याख्यान/ श्यामपट्ट कार्य / समूह परिचर्चा/ विश्लेषण

4	सिद्धान्त और वाद : (क) स्वच्छन्दतावाद (रोमांटिसिज्म), (ख)शास्त्रीयतावाद, (ग) मार्क्सवादी काव्य–सिद्धान्त, (घ) मनोविश्लेषणवादी काव्य सिद्धान्त, (ङ) बिम्बवाद, (च)प्रतीकवाद, (छ)अस्तित्ववाद, (ज) नयी समीक्षा, (झ) साहित्य का समाजशास्त्र		श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा/ विश्लेषण

अधिन्यास कार्य –

1. प्लेटो एवं अरस्तु के अनुकरण सिद्धान्त का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।

अथवा

लोंजाइनस के काव्य में उदात्त की अवधारणा से आप क्या समझते हैं ?

अथवा

अस्तित्ववाद तथा प्रतीकवाद पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–

अधिगम परिणाम–

1. इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी पाश्चात्य काव्यशास्त्र के अन्तर्गत विकसित विविध सम्प्रदायों और सिद्धान्तों का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त कर लेंगे।
2. विद्यार्थी आधुनिक समीक्षा की नयी पद्धतियों एवं कतिपय वादों यथा–प्रतीकवाद, अस्तित्ववाद, बिम्बवाद, नयी समीक्षा आदि को समझ जायेंगे।

सहायक ग्रन्थ–

1. जैन, डॉ0 निर्मला, नयी समीक्षा के प्रतिमान (सं0) ।
2. जैन, डॉ0 निर्मला, प्लेटो के काव्य सिद्धान्त।
3. डॉ0 नगेन्द्र, अरस्तु का काव्यशास्त्र, भारती भंडार, इलाहाबाद।
4. डॉ0 नगेन्द्र, पाश्चात्य काव्यशास्त्र परम्परा।
5. तिवारी, डॉ0 रामचन्द्र, भारतीय एवं पश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी आलोचना, वि0वि0 प्रकाशन वाराणसी।
6. तिवारी, रामपूजन, पाश्चात्य काव्यशास्त्र , प्रकाशन : राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
7. मिश्र, डॉ0 जगदीश प्रसाद, पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त, प्रकाशन : राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
8. मिश्र, डॉ0 भगीरथ, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
9. शाही, योगेन्द्र, अस्तित्ववाद : कीर्केगार्द से कामू तक, मैकमिलन इण्डिया, कोलकाता।

स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम

तृतीय सेमेस्टर, चतुर्थ प्रश्न–पत्र

शीर्षक: हिन्दी पत्रकारिता

प्रश्न–पत्र कोड– HINCC114 अधिकतम अंक–100

उद्देश्य :–

1. संचार माध्यम की विशिष्ट विधा पत्रकारिता के मूलभूत सिद्धान्तों की जानकारी प्राप्त कराना।
2. हिन्दी पत्रकारिता के उद्भव और विकास के क्रम में प्रथम समाचार–पत्र उदन्त मार्तण्ड तथा अन्यान्य प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं यथा–हंस, मतवाला, सरस्वती आदि प्रकाशित समाचार पत्रों की जानकारी प्राप्त कराना।
3. हिन्दी पत्रकारिता एवं हिन्दी साहित्य के सह–संबंधों की जानकारी प्राप्त कराना।
4. पत्रकारिता के संदर्भ में सूचना एवं प्रसारण सम्बन्धी नवीन माध्यमों की अद्यतन जानकारी देना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण–विधि
1	(क) पत्रकारिता की अवधारणा, पत्रकारिता के प्रमुख प्रकार, पत्रकारिता के उद्देश्य (ख)पत्रकारिता के मूल तत्व (ग) सम्पादन कला के सामान्य सिद्धान्त (घ) भेंटवार्ता के प्रकार तथा प्रविधि		व्याख्यान/ श्यामपट्ट कार्य /समूह परिचर्चा/ विश्लेषण
2	(क) पत्रकारिता की आधुनिक विधाएँ : खोजी एवं विश्लेषणात्मक पत्रकारिता,फीचर लेखन एवं विशेषीकृत पत्रकारिता (ख)–रिपोर्टिंग और सम्पादन की प्रक्रिया तथा विविध आयाम (ग) इलेक्ट्रानिक माध्यम और हिन्दी पत्राकारिता (घ) सूचना और कानून–श्रमजीवी पत्रकार कानून, प्रेस कमीशन 1 तथा 2, प्रेस स्वतंत्रता सम्बंधी अद्यतन कानून, प्रसार भारती।		व्याख्यान/ श्यामपट्ट कार्य /समूह परिचर्चा/ विश्लेष
3	(क) हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव और विकास (ख) हिन्दी के प्रमुख पत्र : उदन्त मार्तण्ड,कविवचन सुधा, हिन्दी प्रदीप,		व्याख्यान/ श्यामपट्ट कार्य /समूह परिचर्चा/ विश्लेष

	ब्राह्मण, सरस्वती, कर्मवीर, प्रताप, हंस, माधुरी, मतवाला। (ग)प्रमुख सम्पादक : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र,पं0 युगल किशोर सुकुल, बालकृष्ण भट्ट,पं0 माधव प्रसाद मिश्र,		
4	(क)हिन्दी साहित्यिक पत्राकारिता (ख) हिन्दी पत्रकारिता के वर्तमान संदर्भ, प्रवृत्तियाँ और समस्याएँ (ग) हिन्दी पत्रकारिता के विकास की समस्याएँ		व्याख्यान/ श्यामपट्ट कार्य /समूह परिचर्चा/ विश्लेष

अधिन्यास कार्य –

1. हिन्दी पत्रकारिता के उद्भव और विकास का सविस्तार वर्णन कीजिए।

अथवा

इलेक्ट्रानिक माध्यम एवं पत्रकारिता के अन्तर्सबंधों की समीक्षा कीजिए।

अथवा

संपादन कला के सामान्य सिद्धान्तों को व्याख्यायित कीजिए।

अधिगम परिणाम–

1. विद्यार्थी संचार माध्यम एवं हिन्दी पत्रकारिता के महत्त्व को समझेंगे तथा उसके मूलभूत सिद्धान्तों के अध्ययन करने के पश्चात् वर्तमान हिन्दी पत्रकारिता को नया आयाम देंगे।
2. विद्यार्थी हिन्दी पत्रकारिता के विकास में उदन्त मार्तण्ड, कविवचन सुधा, हंस, सरस्वती, माधुरी, मतवाला जैसी प्रमुख पत्रिकाओं के योगदान का मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे।

सहायक ग्रन्थ–

1. कुमार,सुरेश , इण्टरनेट पत्रकारिता।
2. जैन, डॉ0 रमेश कुमार, हिन्दी पत्रकारिता : आलोचनात्मक इतिहास।
3 जोशी, रामशरण, मीडिया विमर्श।
4 तिवारी, डॉ0 अर्जुन, हिन्दी पत्रकारिता का वृहद् इतिहास, प्रकाशकः वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. तिवारी, डॉ0 अर्जुन, आधुनिक पत्रकारिता, वि0वि0 प्रकाशन, वाराणसी।
6. त्रिपाठी, डॉ0 रमेश चन्द्र, हिन्दी पत्रकारिता।
7. नारायण, शशि, हिन्दी पत्रकारिता और राजभाषा विमर्श।
8. पचौरी सुधीश, दूरदर्शन : विकास से बाजार तक।
9. पचौरी, सुधीश, प्रसार भारती और प्रसारण परिदृश्य।
10. मिश्र, डॉ0 कृष्णबिहारी, हिन्दी पत्रकारिता, प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ,दिल्ली।
11. राय,दीपू, टेलीविजन प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक रूप।
12 लाल, डॉ0 वंशीधर, पत्रकारिता के विविध संदर्भ।
13 व्यास, डॉ0 लक्ष्मीशंकर, हिन्दी पत्रकारिता के युग निर्माता।
14. **वैदिक, डॉ0 वेद प्रताप,** हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम,प्रकाशन : ने0प0 हाउस,नई दिल्ली।

स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम

चतुर्थ सेमेस्टर प्रथम प्रश्न–पत्र

शीर्षक: हिन्दी साहित्य का इतिहास

प्रश्न–पत्र कोड– HINCC116 | अधिकतम अंक–100

उद्देश्य :–

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा एवं तद्विषयक आधारभूत सामग्री से विद्यार्थियों को परिचित कराना।
2. विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन और नामकरण के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान कराना।
3. आधुनिक युग के प्रमुख साहित्यकार, उनकी रचनाओं एवं प्रमुख प्रवृत्तियों से विद्यार्थियों को अवगत कराना।
4. हिन्दी साहित्येतिहास के प्रमुख काल खण्डों की विविध प्रवृत्तियों एवं वादों के संबंध में विद्यार्थियों को अवबोध कराना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण–विधि
1	(क) इतिहास और इतिहास दर्शन (ख) हिन्दी साहित्य का इतिहास : लेखन की परम्परा, आधारभूत सामग्री,सहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ। (ग) हिन्दी साहित्य का इतिहास : काल–विभाजन,सीमा–निर्धारण और नामकरण (घ)–हिन्दी साहित्य : आदिकाल की पृष्ठभूमि, सिद्ध और नाथ–साहित्य, रासो–काव्य, जैन–साहित्य		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य / समूह परिचर्चा / विश्लेषण
2	(क) भक्तिकाल का सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ और भक्ति आन्दोलन, भक्ति की विभिन्न धाराएँ और प्रवृत्तियाँ। (ख) रीतिकाल की परिस्थितियाँ, काल–सीमा और नामकरण, प्रवृत्तियाँ, कवि–श्रेणियाँ और उनकी विशेषताएँ		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य / समूह परिचर्चा / विश्लेषण
3	(क) हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का ऐतिहासिक परिदृश्य : काल–सीमा, नामकरण, साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, प्रतिनिधि रचनाएँ और रचनाकार : (ख) भारतेन्दु युग : प्रमुख साहित्यकार,		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य / समूह परिचर्चा / विश्लेषण

	रचनाएं एवं प्रवृत्तियाँ। (ग)द्विवेदी युग : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ एवं प्रवृत्तियाँ (घ) हिन्दी स्वच्छन्दतवादी चेतना का विकास : छायावादी काव्य, प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ एवं प्रवृत्तियाँ।		
4	(क) छायावादोत्तर काव्य की विविध प्रवृत्तियाँ : प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, नवगीत, समकालीन कविता (ख) हिन्दी की प्रमुख गद्य विधाओं (कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबन्ध और आलोचना) का विकास।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य / समूह परिचर्चा / विश्लेषणण

अधिन्यास कार्य –

1. हिन्दी साहित्येतिहास के काल विभाजन एवं नामकरण पर प्रकाश डालें।

अथवा

'भक्तिकाल हिन्दी साहित्यका स्वर्णयुग है।' इस कथन की समीक्षा करें।

अधिगम परिणाम–

1. इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन, नामकरण एवं काल विभाजन के बारे में जान लेंगे।
2. विद्यार्थी हिन्दी साहित्येतिहास के विभिन्न कालों (आदि काल से लेकर आधुनिक काल तक) की प्रमुख प्रवृत्तियों, आन्दोलनों से अभिज्ञ होंगे तथा समाज के सापेक्ष उसके महत्त्व का मूल्यांकन करेंगे।

सहायक ग्रन्थ–

1. चतुर्वेदी, डॉ0 रामस्वरूप, हिन्दी साहित्य और संवदना का विकास, लोक भारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. डॉ0 नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास (सं0), प्रकाशक : मयूर पेपर बैक्स, नोएडा,दिल्ली।
3. द्विवेदी, डॉ0 हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्य का आदिकाल।
4. द्विवेदी, डॉ0 हजारी प्रसाद, हिंन्दी साहित्य का उद्भव और विकास।
5. द्विवेदी, डॉ0 हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्य की भूमिका, प्रकाशक : बिहार राष्ट्रभाषा परिषद,पटना
6. मिश्र, डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद, हिन्दी गद्यशैली का विकास,प्रकाशक : नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
7. मिश्र, पं0 विश्वनाथ प्रसाद, हिन्दी, साहित्य का अतीत (भाग–1, 2, 3), प्रकाशक : वाणी प्राकशन, नई दिल्ली।
8. वर्मा, डॉ0 रामकुमार, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, प्रकाशक : रामनारायण लाल, प्रयाग।
9. वार्ष्णेय डॉ0 लक्ष्मी सागर, हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रकाशकः महामना प्रकाशन मंदिर, प्रयाग।
10. शुक्ल, रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रकाशन : नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी।

स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम

चतुर्थ सेमेस्टर, द्वितीय प्रश्न–पत्र

शीर्षकः हिन्दी भाषा एवं लिपि

प्रश्न–पत्र कोड– HINCC117 अधिकतम अंक–100

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों को भारतीय आर्यभाषाओं के विकास एवं वर्गीकरण के संबंध में ज्ञान प्राप्त कराना।
2. विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा के भौगोलिक विस्तार तथा हिन्दी की उपभाषाओं एवं बोलियों के विषय में जानकारी प्राप्त कराना।
3. विद्यार्थियों को हिन्दी के विविध रूप यथा–सम्पर्क भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा से परिचित कराते हुए हिन्दी की संवैधानिक स्थिति के विषय में जानकारी प्राप्त कराना।
4. विद्यार्थियों को देवनागरी लिपि के विकास, गुण–दोष एवं वैज्ञानिकता संबंधी ज्ञान प्रदान करना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण–विधि
1	**हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभमि :** प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ,–वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ **मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ :** पालि, प्राकृत–शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ, आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण।		व्याख्यान/ श्यामपट्ट कार्य /समूह परिचर्चा/ विश्लेषणण
2	**हिन्दी का भौगोलिक विस्तार :** हिन्दी की उपभाषाएँ–पश्चिमी हिन्दी,पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और अन्य बोलियाँ।		व्याख्यान/ श्यामपट्ट कार्य /समूह परिचर्चा/ विश्लेषणण
3	**हिन्दी का भाषिक स्वरूप :** हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था–खण्ड्य,खण्ड्येतर हिन्दी शब्द–रचना, उपसर्ग, प्रत्यय, समास, रूप–रचना, लिंग, वचन और कारक–व्यवस्था के संदर्भ में, हिन्दी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया रूप हिन्दी वाक्य–रचना, पद–क्रम और अन्विति।		व्याख्यान/ श्यामपट्ट कार्य /समूह परिचर्चा/ विश्लेषणण
4	हिन्दी के विविध रूपः सम्पर्क भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रूप में हिन्दी,		व्याख्यान/ श्यामपट्ट कार्य /समूह

	हिन्दी की संवैधानिक स्थिति, देवनागरी लिपि : विकास,गुण–दोष, मानकीकरण		परिचर्चा/ विश्लेषणण

अधिन्यास कार्य –

1. भारतीय आर्यभाषाओं के विकास क्रम को विस्तार से वर्णित करें।

अथवा

देवनागरी लिपि के गुण–दोषों की विवेचना कीजिए।

अधिगम परिणाम–

1. इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी भारतीय आर्य भाषाओं के विकास क्रम को समझने के साथ ही हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि के संबंध में विशेष ज्ञान प्राप्त कर लेंगे तथा हिन्दी के संपर्क भाषा, राजभाषा, एवं राष्ट्र भाषा रूप की स्पष्ट पहचान कर लेंगे।

सहायक ग्रन्थ–

1. तिवारी, डॉ0 भोलानाथ, हिन्दी भाषा, प्रकाशन : किताब महल, इलाहाबाद।
2. तिवारी, डॉ0 भोलानाथ हिन्दी भाषा की रचना, प्रकाशन : वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।
8. त्रिपाठी, डॉ0 सत्यनारायण, हिन्दी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास।
4. पाठक, गोपाल स्वरूप, हिन्दी भाषा, लिपि का इतिहास एवं प्रयोग।
5. पाण्डेय, डॉ0 राजकमल, हिन्दी संरचना का शैक्षिक स्वरूप, प्रकाशक : विराट प्रकाशन,आगरा।
6. बाहरी, डॉ0 हरेदव ,हिन्दी भाषा, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. भाटिया, डॉ0 कैलाशचन्द्र, हिन्दी भाषा,प्रकाशन : साहित्य भवन प्रा0लि0 नई दिल्ली।
8. वाजपेयी, आचार्य किशोरीदास, हिन्दी शब्दानुशासन।
9. शर्मा ,आचार्य, देवेन्द्रनाथ, राष्ट्रभाषा हिन्दी : समस्याएँ और समाधान।

स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम

चतुर्थ सेमेस्टर तृतीय प्रश्न–पत्र

शीर्षकः लोक साहित्य

प्रश्न–पत्र कोड– HINCC118 अधिकतम अंक–100

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों को लोक साहित्य की प्रमुख विशेषताओं एवं शिष्ट साहित्य से उसके अन्तर को स्पष्ट कराना।
2. विद्यार्थियों को लोक साहित्य के प्रमुख भेदों यथा–लोकगीत, लोककथा, लोकनाट्य, लोक सुभाषित तथा लोकपहेली इत्यादि का परिचय कराना।
3. विद्यार्थियों को लोकगीतों के विभिन्न रूपों यथा–संस्कार गीत,ऋतु एवं उत्सव गीत, व्रत एवं त्योहार गीत तथा जाति गीतों के विषय में जानकारी देना।
4. विद्यार्थियों को लोकसाहित्य के सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व से अवगत कराना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण–विधि
1	**लोक साहित्य की परिभाषा** : क्षेत्र और लोक वार्ता (लोक संस्कृति) और नागर साहित्य में अन्तर, लोक साहित्य के संग्रहकर्ता, भोजपुरी और लोक साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ। **लोक सहित्य का वर्गीकरण** : विभिन्न विद्वानों द्वारा किये गये वर्गीकरण का परिचय, प्रमुख भेद, लोक गीत, लोक कथा, लोक नाट्य, लोक सुभषित, लोक पहेली।		व्याख्यान /श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा / यांत्रिक माध्यमों द्वारा विद्यार्थियोंको श्रवण कराना/सस्वर वाचन
2	लोक गीतों के विभिन्न रूपों का सोदाहरण विवेचन : संस्कार गीत, ऋतु और उत्सव गीत, व्रत गीत, जाति गीत लोक कथा के विभिन्न रूप–वर्गीकरण और उदाहरण सहित विश्लेषण, लोकगीत और लोक कथा में अन्तर, भोजपुरी और अवधी क्षेत्र की प्रमुख लोक गाथाओं का परिचय।		व्याख्यान /श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा / यांत्रिक माध्यमों द्वारा विद्यार्थियोंको श्रवण कराना/सस्वर वाचन
3	लोक कथा के विभिन्न रूपों का सोदाहरण विवेचन, वस्तु और शैली के आधार पर वर्गीकरण,		व्याख्यान /श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा / यांत्रिक माध्यमों द्वारा

	लोक नाट्य के विभिन्न भेद: भोजपुरी के प्रमुख नाटक		विद्यार्थियोंको श्रवण कराना / सस्वर वाचन
4	लोक सुभाषित की परम्परा और भेद, सोदाहरण विवेचन , लोक पहेलियाँ, स्वरूप भेद और महत्व , लोक साहित्य का सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्तव।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य / समूह परिचर्चा / यांत्रिक माध्यमों द्वारा विद्यार्थियोंको श्रवण कराना / सस्वर वाचन

अधिन्यास कार्य –

1. लोक साहित्य की परिभाषा देते हुए लोक साहित्य की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

अथवा

अपने क्षेत्रके कुछ प्रमुख संस्कार गीतों का सोदाहरण परिचय दीजिए।

अधिगम परिणाम–

1. इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी लोक साहित्य के विविध रूपों एवं विभिन्न लोक विधाओं से परिचित होंगे।
2. विद्यार्थी संस्कार, ऋतु, उत्सव, श्रमगीतों में व्याप्त लोक की सांस्कृतिक चेतना का सम्यक् अवबोध कर लेंगे।
3. विद्यार्थी लोक कथाओं, लोक गाथाओं, लोक नाट्य एवं लोक सुभाषितों के रूप में बिखरे जीवन सूत्रों को आत्मसात् कर लेंगे।

सहायक ग्रन्थ–

1. उपाध्याय कृष्णदेव, भोजपुरी लोक साहित्य का इतिहास।
2. उपाध्याय कृष्णदेव, भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।
3. उपाध्याय,कृष्णदेव, लोक साहित्य की भूमिका। साहित्य भवन, प्रा0लि0 इलाहाआद।
4. कौशिक, डॉ0 जयनारायण, लोकसंस्कृति और लोक साहित्य।
5. परमार, डॉ0 श्याम, भारतीय लोक साहित्य।
6. परमार, डॉ0 श्याम, लोक साहित्य विमर्श।
7. प्रसाद, डॉ0 दिनेश्वर, लोक साहित्य और संस्कृति
8. भाटिया, डॉ0 कैलाशचन्द्र, लोकभाषा।
9. शरतेन्दु, डॉ0 सत्यनारायण दुबे, शारदा पुस्तक भवन, आगरा।
10. शर्मा, डॉ0 कृष्णचन्द्र, लोक साहित्य।
11. शर्मा, डॉ0 रामविलास, लोक जीवन और साहित्य, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम

चतुर्थ सेमेस्टर चतुर्थ प्रश्न–पत्र

शीर्षकः विशेष अध्ययन (कबीर, जायसी, सूरदास एवं तुलसीदास में से किसी एक कवि का समग्र अध्ययन)

कबीरदास

प्रश्न–पत्र कोड– HINCC119 (SPL-1) अधिकतम अंक–100

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों को कबीर की साधना पद्धति एवं प्रगतिशील, सामाजिक चेतना से अवगत कराना।
2. विद्यार्थी कबीर की दार्शनिक विचार धाराओं से पूर्णतः परिचित हो सकेंगे।
3. वर्तमान समय में कबीर की प्रासंगिकता सिद्ध करते हुए समाज के प्रति सकरात्मक दृष्टिकोण विकसित करेंगे।
4. कबीर के प्रति शोधपरक अध्ययन को बढावा मिलेगा।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि(60 घण्टे)	शिक्षण – विधि
1	समीक्षात्मक अध्ययन– कबीर का जीवन एवं उनका युग, ऐतिहासिकता, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, सामाजिक– धार्मिक चिंतन।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन
2	कबीर का काव्य एवं दर्शन– काव्य, सौन्दर्य, भाषा, व्यंग्य एवं कला, भक्ति ब्रह्मा, माया, एकेश्वरवाद, कबीर और अद्वैतवाद, कबीर की प्रासंगिता .		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन
3	व्याखेय– कबीर, (पद सं0– 160 से 185 तक) सं0: कबीर– हजरी प्रसाद द्विवेदी .		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन
4	वयाख्येय– कबीर (पद सं0 186 से 209 तक) सं0– कबीर–हजारी प्रसाद द्विवेदी		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा/ सस्वर वाचन

स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम

चतुर्थ सेमेस्टर चतुर्थ प्रश्न–पत्र

शीर्षक: विशेष अध्ययन (कबीर, जायसी, सूरदास एवं तुलसीदास में से किसी एक कवि का समग्र अध्ययन)

सूरदास

अधिकतम अंक–100

प्रश्न–पत्र कोड– HINCC119 (SPL-2)

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों को सूरदास की सगुण भक्ति पद्धति एवं बाल मनोविज्ञान से अवगत कराना।
2. विद्यार्थी सूरदास की दार्शनिक विचार धाराओं से पूर्णतः परिचित हो सकेंगे।
3. वर्तमान समय में विद्यार्थी सूरदास के पदों के माध्यम से नारी विमर्श के प्रति नवीन अवधारणा प्रस्तुत करने में समर्थ होंगे।
4. सूरदास के प्रति शोधपरक अध्ययन को बढ़ावा मिलेगा।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण–विधि
1	समीक्षात्मक अध्ययन–सूरदास का जीवन एवं उनका युग, अष्टछाप, सगुण–निर्गुण का द्वन्द, माधुर्य भक्ति , ज्ञान तथा कर्म योग।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा।
2	सूरदास का काव्य एवं दर्शन –काव्य सौन्दर्य, भाषा, वाक्चातुर्य एवं कला, भक्ति, उद्धव–गोपी संवाद, योग संदेश, वाग्विदग्धता।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा।
3	व्याखेय–सूरदास,(पद सं0–21 से 45 तक) सं0 : भ्रमरगीत सार,डा0 रामचन्द्र शुक्ल		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा/ सस्वरवाचन।
4	व्याखेय–सूरदास,(पद सं0–46 से 70 तक) सं0 : भ्रमरगीत सार,डा0 रामचन्द्र शुक्ल		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा/सस्वर वाचन।

अधिन्यास–कार्य :–

1. सूर का साहित्य बाल मनोवैज्ञानिक स्तर पर समृद्ध है, इस कथन के आलोक में सूर के वात्सल्य वर्णन पर प्रकाश डालिए।

अथवा

उद्धव–गोपी संवाद के आधार सूर के काव्य सौन्दर्य की विवेचना कीजिए

अथवा

वर्तमान संदर्भ में सूर का काव्य नारी विमर्श के लिए नवीन मानदण्ड स्थापित करता है। सिद्ध कीजिए।

अधिगम परिणाम :–

1. इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी भक्तिकाल की सगुण काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि सूरदास की रचनाओं का आस्वादन कर सकेंगे।
2. सूर की रचनाओं के आधार पर भक्ति आन्दोलन की मूल संवेदना से परिचित हो सकेंगे।

सहायक ग्रंथ :–

1. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र ,त्रिवेणी, प्रकाशन–लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, सूर सहित्य, प्राकशन– राजकमल प्राकशन, नई दिल्ली।
3. वाजपेयी, आचार्य नन्द दुलारे, महाकवि सूरदास, प्राकशन– राजकमल प्राकशन, नई दिल्ली।
4. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र ,सूरदास, प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली।
5. वर्मा, डॉ0 ब्रजेश्वर (सं0) सूरसागर, प्रकाशन– ज्ञानमण्डल लि0, वाराणसी।
6. गौतम, महनमोहन, सूर की काव्य–कला, प्रकाशन– भारतीय साहित्य मन्दिर, दिल्ली।
7. मिश्र, शिवकुमार, भक्ति–आन्दोलन और भक्ति–काव्य, प्रकाशन–लोकभारती प्राकशन, इलाहाबाद।
8. पाण्डेय, मैनेजर, सूरदास, प्रकाशन–साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।
9. शर्मा, डॉ0 रामविलास, परम्परा का मूल्यांकन, प्राकशन– राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. गुप्त, डॉ0 दीनदायल (सं0), अष्ठछाप और बल्लभ, प्रकाशन–हिन्दी साहित्य सम्मलेन, प्रयाग।

स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम

चतुर्थ सेमेस्टर चतुर्थ प्रश्न–पत्र

शीर्षक: विशेष अध्ययन (कबीर, जायसी, सूरदास एवं तुलसीदास में से किसी एक कवि का समग्र अध्ययन)

तुलसीदास

अधिकतम अंक–100

प्रश्न–पत्र कोड– **HINCC119 (SPL-3)**

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों को तुलसीदास की भक्ति पद्धति एवं आदर्श भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक से अवगत कराना।
2. विद्यार्थी तुलसी काव्य के माध्यम से मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र को आत्मसात कर सकेंगे।
3. वर्तमान समय में विद्यार्थी तुलसीदास के पदों के माध्यम से तत्कालीन समाज के प्रति नवीन अवधारणा को परिष्कृत कर सकेंगे।
4. तुलसीदास के प्रति शोधपरक अध्ययन को बढ़ावा मिलेगा।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण–विधि
1	समीक्षात्मक अध्ययन–तुलसीदास का जीवन परिचय एवं उनका युग, ग्रंथ परिचय, भक्ति भावना, तुलसी का सुधारक रूप, रामराज्य की परिकल्पना।		व्याख्यान विधि / श्यामपट्ट कार्य / समूह परिचर्चा।
2	तुलसी का काव्य एवं दर्शन –काव्य सौन्दर्य, काव्य भाषा, दार्शनिक विचार, लोक कवि तुलसी.		व्याख्यान विधि / श्यामपट्ट कार्य / समूह परिचर्चा।
3	व्याख्येय–उत्तरकाण्ड, (प्रारम्भ से 65 तक) रामचरितमानस, गीताप्रेस		व्याख्यान विधि / श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा / सस्वरवाचन।
4	व्याख्येय–उत्तरकाण्ड,(66 से अन्त तक) रामचरितमानस, गीताप्रेस		व्याख्यान विधि / श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा / सस्वर वाचन।

अधिन्यास–कार्य :–

1. तुलसी के समन्वयवादी वैशिष्ट्य पर विस्तृत प्रकाश डालिए।

अथवा

तुलसीदास रामभक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। उत्तरकाण्ड के आधार पर सिद्ध कीजिए।

अथवा

रामचरितमान के उत्तरकाण्ड में एक आदर्श स्थापित किया है। कैसे ?

अधिगम परिणाम :–

1. इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी भक्तिकाल की रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि तुलसीदास की रचनाओं का आस्वादन कर सकेंगे।
2. तुलसीदस की रचनाओं के आधार पर भक्ति आन्दोलन की मूल संवेदना से परिचित हो सकेंगे।

सहायक ग्रंथ :–

1. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र ,त्रिवेणी, प्रकाशन–लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र ,गोस्वामी तुलसीदास , प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली।
3. सिंह, उदयभानु, तुलसी, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. त्रिपाठी, राममूर्ति, तुलसी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. त्रिपाठी, रामनरेश, तुलसी और उनका काव्य, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।
6. त्रिपाठी, विश्वनाथ, लोकवादी तुलसीदास, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. सिंह, योगेन्द्र प्रताप, श्रीरामचरितमानस सप्तम सोपन : उत्तरकाण्ड, लोकभारती प्रकाशन, इलाबाद।
8. तिवारी, रामचन्द्र, तुलसीदास, वाणी प्राकशन, नई दिल्ली।
9. तिवारी अजय (सं0), तुलसीदास : एक पुनर्मूल्यांकन।
10. मिश्र, शिवकुमार, भक्ति–आन्दोलन और भक्ति–काव्य, प्रकाशन–लोकभारती प्राकशन, इलाहाबाद।

स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम

चतुर्थ सेमेस्टर चतुर्थ प्रश्न–पत्र

शीर्षक: विशेष अध्ययन (कबीर, जायसी, सूरदास एवं तुलसीदास में से किसी एक कवि का समग्र अध्ययन)

मलिक मुहम्मद जायसी

अधिकतम अंक–100

प्रश्न–पत्र कोड– HINCC119 (SPL-4

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों को जायसी की भक्ति पद्धति एवं आदर्श भारतीय सूफी प्रेम से अवगत कराना।
2. विद्यार्थी जायसी काव्य के माध्यम से प्राचीन लोककथाओं में वर्णित हिन्दू रीति–रिवाजों एवं त्योहारों को आत्मसात कर सकेंगे।
3. वर्तमान समय में विद्यार्थी जायसी के पदों के माध्यम से हिन्दू–मुस्लिम एकता को समझ सकेंगे।
4. जायसी के प्रति शोधपरक अध्ययन की बढ़ावा मिलेगा।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण–विधि
1	समीक्षात्मक अध्ययन–जायसी का जीवन परिचय एवं उनका युग, ग्रंथ परिचय, सूफी साधना पद्धति, एकेश्वरवाद, हिन्दू–मुस्लिम एकता, आत्मा–परमात्मा की एकता।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा।
2	जायसी का काव्य एवं दर्शन –काव्य सौन्दर्य, काव्य भाषा, दार्शनिक विचार, सूफी रहस्यवाद, विरह वर्णन, बारहमासा का महत्त्व।		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा।
3	व्याख्येय– (प्रारम्भ से 10 पद) नागमती वियोग खण्ड		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा/ सस्वरवाचन।
4	व्याख्येय– (11 से 19 पद) नागमती वियोग खण्ड .		व्याख्यान विधि/ श्यामपट्ट कार्य समूह परिचर्चा/सस्वर वाचन।

५२

अधिन्यास–कार्य :–

1. 'नागमती विरह–वर्णन हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है।' इस कथन की समीक्षा करें।

अथवा

बारहमासा से आप क्या समझते हैं, इसकी विवेचना कीजिए।

अथवा

सूफी कविता के संदर्भ में जायसी का मूल्यांकन कीजिए।

अधिगम परिणाम :–

1. इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी सूफी काव्य की दार्शनिक विचारधारों से परिचित हो सकेंगे।
2. जायसी की रचनाओं के आधार पर सूफी काव्य की मूल संवेदना से परिचित हो सकेंगे।
3. नागमती विरह वर्णन के आधार पर हिन्दी साहित्य के विभिन्न कवियों के विरह वर्णन के संदर्भ में परिचित होंगे।

सहायक ग्रंथ :–

1. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र ,त्रिवेणी, प्रकाशन–लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र(सं0) ,जायसी ग्रन्थावली, वाणी प्राकशन, नई दिल्ली।
3. साही, प्रो0 विजयदेव नारायण, जायसी, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद।
4. श्रीवास्तव, परमानन्द, जायसी, सहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।
5. रघुवंश, जायसी : एक नयी दृष्टि, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. सूफीमत : साधना और साहित्य, बनारस ज्ञानमण्डल लि0 वाराणसी।
7. मिश्र, शिवकुमार, भक्ति–आंदोलन और भक्ति–काव्य, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
8. पाठक, डॉ0 शिवसहायक, मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य, ग्रन्थम, रामबाग, कानपुर।
9. श्रीवास्तव, जगदीश प्रसाद, जायसी के पद्मावत का मूल्यांकन।

-43